ज्योतिषमहामहोपाध्याय
डा. विजयनाथ ज्योतिष-शर्मा
2F, डा. 11, Zone I, Bhilai
C.G. (Durg)

अध्यात्म

प्राय: लोग अध्यात्म का अर्थ पूजा-पाठ, पठन-पाठन अथवा भक्ति को ही अध्यात्म समझ बैठते हैं, वैसे यह अच्छी बात है यह एक बाहरी आयाम हो सकता है, यह एक शुरुआत हो सकती है, यह कुछ प्रकाश हो सकता है वास्तव में यह एक प्रारंभिक शुरुआत है, एक रास्ता है, एक सोच है, अध्यात्म अपने अन्दर एक गहराई लिये हुआ है, हम ऐसी भाषा को लोगो के बीच प्रयोग कर सकते है और हो रहा है। आज का प्रगतिशील, पढ़े-लिखे विद्वानो के बीच यह मात्र आस्थावादी विचार बनकर ही रह गया, परन्तु अध्यात्म से अधिकांश लोग परिचित नहीं हो पाये वंचित रह गये।

अध्यात्म आत्मा का परमात्मा से मिलन है, जब आत्मा सतगुरु की कृपा से परमात्मा को परमात्मा को प्राप्त कर लेता है तो वह सांसारिक मोहमाया से मुक्त हो जाता है, फिर बार-बार जन्म लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती। अध्यात्म का अर्थ अपने भीतर चेतन तत्व को मानना दर्शन करना, जानना अर्थात अपने आप के बारे में अपने स्वरुप को जानना।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में कही है —
'यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम'।
Once on to my Kingdom Never Return

आगे भी अध्याय 8 में अर्जुन स्वयं भगवान कृष्ण से पूछते हैं कि,

हे पुरुषोत्तम! वह ब्रह्म क्या है। और कर्म के माने क्या हैं (~~अध्यात्म~~ अध्याय 8 श्लोक 1 लोकमान्य तिलक का अनुवाद गीता रहस्य पृष्ठ 489) मूल श्लोक है

'किं तद् ब्रह्म किम अध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम'

यहाँ ब्रह्म की जिज्ञासा है ब्रह्म ईश्वरीय जिज्ञासा है आगे जानने की इच्छा है। फिर आगे कृष्ण का उत्तर है-

'अक्षरं ब्रह्म परमं, स्वभावो अध्यात्म उच्यते'-

परम अक्षर अर्थात कभी भी नष्ट न होने वाला तत्व ब्रह्म है इसलिए धर्म और अध्यात्म में अन्तर है, अध्यात्म से सम्बन्ध आंतरिक पक्ष, धर्म का अर्थ जीवन के वाह्य पक्ष से अध्यात्म हमारे जीवन का प्रकाश है। इसके माध्यम से ईश्वर की प्राप्ति, मिलन संभव है यह परमात्मा की एक ऐसी बूंद है कि जीवन धन्य हो जाता है अत: इस प्रेम की बूंद जो ईश्वर की कृपा से मिला है, संभालकर रखें यदि इसका लोप हो जायेगा तो अमूल्य आनंद से वंचित हो जायेंगे, फिर पश्चाताप के सिवा कुछ भी हाथ नहीं लगती जीवनभर भटकते रहेंगे।

इसमें कोई शंका नहीं है कि भारतीय संस्कृति अध्यात्म प्रधान है, अत: हमारी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है कि इसको आगे बढ़ाते रहें यह मानते हैं कि यह विज्ञान का समय है जो

जो भौतिकता के क्षेत्र में प्रगति किया है बहुत कुछ उन्नति का कारण है विज्ञान धन्यवाद का पात्र है जहाँ इतनी प्रगति की है वहीं पर जनमानस के अन्दर थोड़ी उदासीनता की ओर ले गया, जैसे जैसे हम भौतिकता की ओर बढ़ेंगे, अध्यात्म में कमी आयेगी तथा दूरी बनेगी, अतः हमें इसको ध्यान में रखते अध्यात्म दर्शन की ओर बढ़े। महान विश्वगुरु स्वामी विवेकानंद का यह दृढ़ विश्वास था कि

' अध्यात्म विद्या भारतीय धर्म एवं दर्शन के बिना विश्व अनाथ हो जायेगा'। उनका मानना था कि मनुष्य के पास संसार की प्रत्येक वस्तु है पर अध्यात्म नहीं तो कुछ भी नहीं, उनकी दृष्टि में मनुष्य की यह पंच-प्रकृति आत्मा उतनी ही सत्य है जितनी कि किसी पाश्चात व्यक्ति की इन्द्रियों के लिए कोई भौतिक पदार्थ।

भारतीय दर्शन के अनुसार सम्पूर्ण संसार ईश्वर से व्याप्त है।

बृहदारण्यक उपनिषद (2,3,4..) में कहते हैं

" अध्यात्म का वर्णन किया जाता है " अथ अध्यात्म मिदेव "। समझाते हैं ' जो प्राण है वे और शरीर के भीतर आकाश से भिन्न है, यह मूर्त के मर्त्य के इस सत् के सार है"। यहाँ अध्यात्म का विषय प्राण और आकाश को छोड़कर बाकी देह है।

शंकराचार्य के भाष्य के अनुसार -

" आध्यात्मिक शरीरस्यैष रसः सार"
यानी शरीरमय भूतो का रस यानी सार है"।

शरीर की भीतर ~~चैतन्य~~ चैतन्य है, प्राण है। इसके भीतर आकाश भी है। बाकी जो कुछ भी है वह आसपास है।

कबीरदास के अनुसार—

पाणी ही तै हिम भया, हिम गया विलाई।
जो कुछ था सोई भया, अब कुछ कहा न जाई॥

अध्यात्म का ज्ञान अर्थात किसी अध्यपन संसार में रहने का प्रथम सोपान है, यह एक यात्रा है, इसी विषय पर मैंने कहीं किसी सत्संग में इसी पर चर्चा सुनी थी याद आ गया, अच्छी लगी स्वामीजी स्वर्वेद के अनुसार—

शून्य शिखर पंगु चढ़े,
चढ़ पगवान न जाय।
मन अरु पवन अभावमें,
क्षीप्र उर्ध्व चढ़ जाय॥

यह तो शून्यशीखर है यहाँ तो पंगु होता है वह चढ़ जाता है यह ऐसा शिखर है जहाँ पैर वाले नहीं चढ़ते। ऐसा शिखर है पंगु चढ़ता है, यह शून्य शिखर का दिव्य स्थान है।

—०—

डा. विजयनाथ ज्योतिषाचार्य